आज की मुरली का सहज सार ---------- Date: 14-07-14

बाबा ने कहा, कलंगीधर बनने के लिए अपनी अवस्था अचल-अडोल बनाओ, जितना तुम पर कलंक लगते हैं और तुम शांत में रहकर अपनी ऊँच अवस्था से सहेज भी डिस्टर्ब हुए बिना मीठा रहते हो, उतना तुम कलंगीधर बनते हो.

भक्ति में हम सब जानते हैं की कलंगीधर नाम तो श्रीकृष्ण के लिए गाया हुआ हैं. भक्ति में कहते हैं कृष्ण की तो 16000 पटरानियाँ थी और इसको भगाया या उसको भगाया, बहुत ऐसी-वैसी बाते श्रीकृष्ण के लिए कही हैं. लेकिन हम जानते हैं श्रीकृष्ण तो सतयुग का पहला प्रिन्स हैं और सर्वगुण सम्पन्न, सोलेकला संपूर्ण हैं. फिर भी उसका नाम कलंगीधर क्यों पड़ा, भक्ति में यह समझ नहीं थी.

बाबा ने ज्ञान में हमें समझाया की जब कलियुग के अन्त में स्वयं परमपिता-परमात्मा शिव इस धरती पर आकर, नयी सतयुगी दुनिया की स्थापना करने, ब्रह्मा द्वारा ज्ञान-रुद्र यज्ञ (ब्रह्माकुमारी विश्व विधालय ही शिवबाबा का बेहद का ज्ञान-रुद्र यज्ञ हैं) रचते हैं. तो माया (रावण) भी अपना राज्य बचाने के लिए कई मनुष्यों को युज कर इस महान ज्ञान-रुद्र यज्ञ में विघ्न पैदा करती हैं. कई मनुष्य सोचे-समझे बिना माया का हथियाला बन के इस बेहद के ज्ञान-रुद्र यज्ञ को बहुत बुरा-भला कहते हैं. समझते नहीं की इसको चलाने वाला तो स्वयं परमपिता-परमात्मा (भगवान या गोड़) शिव हैं.

लेकिन ऐसी स्थिति में हम ब्राह्मण बच्चों को कोई से भी खिट-खिट नहीं करनी हैं. शांति में रहना हैं. अगर कोई हमारे विरोध में कुछ भी बोलता हैं या यज्ञ के विरोध में कुछ भी बोलता हैं या उसे हमारी कोई बात अच्छी नहीं लगती हैं तो भी हमें चुप रहना हैं. ना हमें खुद तंग होना हैं या किसी और को भी तंग नहीं करना हैं. किसी का व्यवहार देखकर हमारे में कोई भूत (गुस्से का) ना आ जाये और हमारे मुख से कोई कडुवे बोल भी न निकले इसका बहुत ध्यान रखना ही हैं. मीठा बोलना जीवन की धारणा हो जाए.

अब समझा की श्रीकृष्ण ने अपने अगले जन्म में, ब्रह्मा के रुप में, स्वयं परमात्मा द्वारा स्थापित इस बेहद के ज्ञान-रुद्र यज्ञ में अपनी हड्डी स्वाहा करके, यज्ञ के ऊपर जो भी विघ्न पड़े या अपने ऊपर कलंक भी लगे फिर भी अपनी अवस्था को अचल-अडोल बना के रखा और भगवान शिव के कार्य में पूरा सहयोगी बना तभी उसका गायन भक्ति में हम सब कंलगीधर के रुप में करते हैं.

जब हम अपनी स्थिति ऐसी बना लेते हैं - अचल-अडोल. तब हम भी कलंगीधर कहलायेंगे.

ॐ शांति.